



अंक: 05, वर्ष 2023-24



ई-प्रयास e – Prayaas

राजभाषा हिन्दी प्रसार पत्रिका

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स
चेन्नई

दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स
राजभाषा हिन्दी प्रसार पत्रिका

मुख्य संरक्षक
शैलेश तिवारी
कार्यकारी निदेशक

संरक्षक
बालकृष्ण नायक डी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

मुख्य संपादक
विक्रान्त कुमार
(मानव संसाधन प्रबन्धक)

पत्रिका डिजाइन एवं संकलन
अजय प्रकाश विश्वकर्मा

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी विचार हैं। इनसे संपादक एवं संस्थान का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। निशुल्क एवं निजी वितरण हेतु प्रकाशित

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

- महात्मा गांधी

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	संदेश	4
2	एसआरपीएल में एसआरपीएल एक्स्ट्रा लॉन्चिंग का प्रभाव	5
3	शीर्षक: चंद्रयान-3 मिशन: भारत की वैज्ञानिक उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कदम	6-7
4	मेरे पापा	8
5	सहयोग की भावना	9
6	आजादी के अमृत काल की ओर ...	10-11
7	स्वच्छता की जिम्मेदारी	12
8	स्वॉपेबल बैटरियों के लिए यूरोपीय संघ का संघर्ष	13-14
9	21वीं सदी में डिजिटल नागरिकता: आविर्त दृश्य की नेविगेशन	15
10	महिलाओं सशक्तिकरण	16-18
11	चिट्ठियों की यादें	19
12	सकारत्मकता का महत्व	20
13	विज्ञान के क्षेत्र में बढ़ता भारत का दबदबा	21-23
14	हिन्दी मुहावरे	24
15	प्रतीक का संकल्प	25-26
16	आओं ! सीखें हिंदी।	27
17	हिंदी भाषा के रोचक तथ्य	28
18	रहने योग्य जलवायु के लिए : शुद्ध शून्य प्रतिबद्धताएं	29-30
19	राजभाषा क्रियाकलापों की झलकियाँ	31
20	राजभाषा क्रियाकलापों की झलकियाँ	32
21	चुटकुलें	33



मुख्य संरक्षक महोदय की कलम से ।

प्रिय साथियों,

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भाषा मन के भाव को व्यक्त करने का एक सुदृढ माध्यम के साथ-साथ राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक होती है। विश्व की सर्वाधिक प्रचलित भाषाओं में शामिल हिंदी की निरंतर प्रगति उत्साहवर्धक है। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न केवल अपनाया जा रहा है बल्कि विदेश स्थित पाठशाला और विश्वविद्यालयों में काफी संख्या में लोग इसका अध्ययन कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी का बढ़ता उपयोग और लोकप्रियता एक उज्वल भविष्य की तस्वीर प्रस्तुत करती है।

आज हिन्दी भाषा अपने देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में प्रगति कर रही है। इस प्रगति के अनेक कारण हैं जिनमें व्यापारिक एवं पर्यटक गतिविधियां भी अहम भूमिका निभाती हैं ।

स्वभावतः हमने देखा है की कार्यालय में हिन्दी बोलचाल में अधिकाधिक प्रयोग की जा रही है लेकिन कार्यालयीन कामकाज में सरल एवं सहज हिन्दी का प्रयोग कर बढ़ाने की आवश्यकता है ।

यह अत्यंत सरहनीय है कि दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स में हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस उत्साह से मनाया जाता है और समय-समय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन, हिन्दी प्रतियोगिताओं, दैनिक कामकाज में हिन्दी का उपयोग एवं नीति-नियमों का पालन किया जा रहा है ।

आइए ! हिन्दी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम यह दृढ संकल्प लें कि हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य पूर्ण उत्साह, लगन और गर्व के साथ राजभाषा हिन्दी में करेंगे ।

शैलेश तिवारी
कार्यकारी निदेशक

एसआरपीएल में एसआरपीएल एक्स्ट्रा लॉन्चिंग का प्रभाव

निदेशक (पाइपलाइन्स) ने चेन्नई में "एसआरपीएल एक्स्ट्रा, बियॉन्ड द समिट" लोगो का उद्घाटन किया। लॉन्च के बाद से, एसआरपीएल ने कई पहलुओं में सराहनीय प्रदर्शन किया है। आज उन सभी प्रयासों और प्रशंसाओं को याद करने का समय है जो एसआरपीएल को मिलीं।

जुलाई 2022 के महीने में, एसआरपीएल ने अधिकतम प्रतिभागियों के साथ अधिकतम संख्या में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए इंडियन ऑयल के आधार पर सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता पुरस्कार जीता। सितंबर में, गुवाहाटी में पहली बार इंडियन ऑयल एथलेटिक मीट में, एसआरपीएल ने पाइपलाइनों में अधिकतम संख्या में पदक जीते और समग्र आधार पर तीसरा स्थान हासिल किया। बेस्ट प्रतियोगिता में एसआरपीएल ने दोनों मुख्य श्रेणियों में शीर्ष स्थान हासिल किया। एसआरपीएल को 2022-23 के लिए शून्य चोरी पुरस्कार मिला। एसआरपीएल मदुरै स्टेशन ने भारतीय तेल स्टेशनों के बीच सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा सूचकांक स्टेशन का पुरस्कार जीता। इन सबके अलावा, एसआरपीएल कंस्ट्रक्शन और एसआरपीएल सीजीडी ने पाइपलाइन डिवीजन में शीर्ष स्थान हासिल किया। हाल ही में आयोजित 2022-23 एचआर इंडेक्स में, एसआरपीएल सेलम ने सभी स्टेशनों के बीच सर्वश्रेष्ठ एचआर इंडेक्स स्टेशन का पुरस्कार जीता।

हाल ही में एसआरपीएल ने पैन इंडियन ऑयल के आधार पर स्वच्छता के लिए हॉल ऑफ फेम सहित सभी प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते।



आजकल सभी कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी के कारण सभी आधिकारिक कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ मनाए जा रहे हैं; ओणम, इंडिया ऑयल दिवस, एसआरपीएल स्थापना दिवस आदि इसके कुछ उदाहरण हैं। एसआरपीएल के लिए पुरस्कार और इनाम प्राप्त करने की वजह से सभी कर्मचारियों का उत्साह एवं मनोबल बढ़ा है। प्रत्येक पुरस्कार के लिए ताली बजाना भी बंद कर दिया गया है क्योंकि यह एसआरपीएल में नियमित हो गया है।

हमें उम्मीद है कि एसआरपीएल में यह रुझान जारी रहेगा।



आर मस्तानय्या नायडू
उप महाप्रबंधक (सुरक्षा)

चंद्रयान-3 मिशन: भारत की वैज्ञानिक उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कदम

चंद्रयान-3 मिशन भारत के लिए गहरा महत्व रखता है क्योंकि यह चंद्र अन्वेषण पर विशेष ध्यान देने के साथ देश की अंतरिक्ष अन्वेषण यात्रा की निरंतरता का प्रतिनिधित्व करता है। अपने पूर्ववर्तियों, चंद्रयान-1 और चंद्रयान-2 की सफलताओं को आगे बढ़ाते हुए, चंद्रयान-3 मिशन वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

वैज्ञानिक अनुसंधान और खोज:

चंद्रयान-3 का उद्देश्य चंद्रमा की सतह, संरचना और स्थलाकृति का विस्तृत अध्ययन करना है। यह मिशन चंद्रमा के भूवैज्ञानिक विकास के बारे में हमारी समझ का विस्तार करने में योगदान देगा, जिसका पृथ्वी के अपने इतिहास पर प्रभाव पड़ता है। चंद्रमा की मिट्टी के नमूनों का विश्लेषण करके और विभिन्न सतह विशेषताओं का मानचित्रण करके, वैज्ञानिक चंद्रमा के गठन और उसके बाद सौर मंडल के साथ बातचीत के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

तकनीकी नवाचार:

चंद्रयान-3 मिशन का एक प्रमुख घटक उन्नत प्रौद्योगिकियों का विकास और परीक्षण है। इस मिशन में क्षेत्र की विशेषताओं का पता लगाने और उनका विश्लेषण करने के लिए चंद्रमा की सतह पर एक रोवर को उतारना शामिल है। इस प्रयास के लिए जटिल इंजीनियरिंग और सटीकता की आवश्यकता है, जो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को अपनी तकनीकी क्षमताओं की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती है। चंद्रयान-3 का सफल निष्पादन जटिल अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में भारत की शक्ति को प्रदर्शित करेगा, जिससे क्षेत्र में अग्रणी के रूप में देश की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।



(फोटो सौजन्य: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन)

आर्थिक लाभ और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:

चंद्रयान-3 मिशन केवल वैज्ञानिक जिज्ञासा के बारे में नहीं है; इसमें पर्याप्त आर्थिक लाभ प्राप्त करने की भी क्षमता है। अंतरिक्ष उद्योग, अपनी स्पिन-ऑफ प्रौद्योगिकियों और उपग्रह अनुप्रयोगों के माध्यम से, आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, अन्य देशों के साथ मिशन का सहयोग ज्ञान, विशेषज्ञता और संसाधनों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है, जो वैश्विक स्तर पर तकनीकी प्रगति और नवाचार को गति दे सकता है।

युवाओं को प्रेरणा:

चंद्रयान-3 की खोज और नवाचार की खोज भारत के युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती है। जैसे-जैसे मिशन मीडिया का ध्यान और सार्वजनिक हित आकर्षित करता है, यह छात्रों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में करियर पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। चंद्रयान-3 की ठोस उपलब्धियों को देखकर, युवा मन भारत की तकनीकी प्रगति के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शिक्षा और करियर बनाने के लिए प्रेरित होते हैं।

राष्ट्रीय प्रतिष्ठा:

चंद्रयान-3 के सफल क्रियान्वयन से वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय में भारत का स्थान ऊंचा होगा। यह वैज्ञानिक अन्वेषण के प्रति देश की प्रतिबद्धता और जटिल अंतरिक्ष मिशनों को स्वतंत्र रूप से विकसित करने और निष्पादित करने की क्षमता को सुदृढ़ करेगा। मिशन की सफलता न केवल भारत की राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को बढ़ाएगी बल्कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष सहयोग के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में इसकी भूमिका को भी मजबूत करेगी।

निष्कर्ष:

चंद्रयान-3 मिशन अंतरिक्ष के अज्ञात क्षेत्रों का पता लगाने, चंद्रमा के रहस्यों को उजागर करने और मानव ज्ञान की उन्नति में योगदान देने के भारत के दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी नवाचार, आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, युवा प्रेरणा और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर ध्यान केंद्रित करके, मिशन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ने और वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में देश की स्थिति को और ऊपर उठाने के लिए तैयार है।

“हिंदी हमारे राष्ट्र की
अभिव्यक्ति का सरलतम
स्त्रोत है।”

-समित्रानंदन पंत



कार्तिकेय श्रीवास्तव
सहायक प्रबंधक (ओ एंड एम)
एसआरपीएल - मदुरै

मेरे पापा

मेरी हर पसंद के खिलौने दिलाने वाले मेरे पापा ।

मुझे प्यार की भाषा पढ़ाने वाले मेरे पापा ।

मेरी आंखों की सच्ची जान लेने वाले मेरे पापा ।

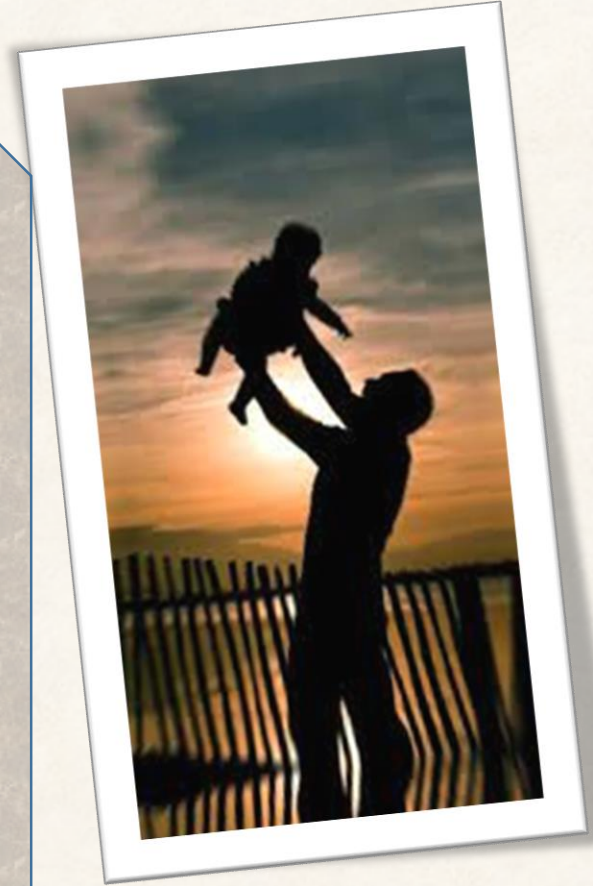
मेरी हँसी के पीछे दुख को जान लेने वाले मेरे पापा ।

मेरी हर एक परेशानियों को जान लेने वाले मेरे पापा ।

मेरी बहादुरी के क्रिसे बोलने वाले मेरे पापा ।

मेरी हर एक ख्वाहिशों को पूरा करने वाले मेरे पापा ।

मेरी जिंदगी को खुसियों से भरने वाले मेरे पापा ।



मो० मिस्टर जिन्ना

अभियांत्रिकी सहायक (दूर संचार एवं उपकरण)

दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स, चेंगलपेट

सहयोग की भावना

एक दिन शरीर की इन्द्रियो ने सोचा की हम लोग मेहनत कर करके मर जाते है और ये पेट हमारी कमाई मुफ्त में ही खा जाता है। अब से हम कमाएँगे तो हम खुद ही खाएँगे, नहीं तो काम करना ही बंद कर देंगे। इस सुझाव पर सबने हामी भर दी। पेट को इस प्रस्ताव का पता चला तो बोला – मैं तुम्हारी कमाई खुद नहीं रखता हूँ। जो कुछ तुम लोग देती हो, उसे तुम्हारी शक्ति बढ़ाने के लिए वापस तुम्हारे पास भेज देता हूँ। यकीन रखों, तुम्हारा परिश्रम तुम्हे ही वापस मिल जाता है। यह बात इन्द्रियो के समझ में नहीं आई। उनकी नाराजकी बनी रही। आपस में रखे गए प्रस्ताव के अनुसार, सभी इन्द्रियो ने काम करना बंद कर दिया। पेट को भोजन नहीं मिला तो वह भूख से तड़पने लगा। खुद के शिथिल पड़ने पर वह अब दुसरे अंगों को भी उर्जा देने में असमर्थ हो गया। इससे शरीर के सारे अंगों की शक्ति नष्ट होने लगी। शरीर का ऐसा हाल देखकर मस्तिष्क ने इन्द्रियो से कहा- मूर्खों तुम्हारे परिश्रम कोई नहीं खा रहा है। वह लौटकर तुम्हे ही वापस मिलता है। ये मत सोचो की दूसरों की सेवा से तुम्हारा नुकसान होता है, जो तुम दूसरों को देते हो वह ब्याज समेते



तुम्हारे पास लौटकर आता है। भोजन से मिलने वाली उर्जा के आभाव से जूझ रही इन्द्रियो को आपसी सहयोग की वास्तविकता समझ में आ गई। उन्होंने पहले की तरह काम करना शुरू कर दिया। और फिर कभी शिकायत नहीं की। दोस्तों कार्य की सफलता का श्रेय किसी को भी जायें, यह सम्भव सामूहिक पुरषार्थ से ही होता है।



मनोज कुमार

सहायक प्रबन्धक(प्रचालन&अनुरक्षण)
एसआरपीएल, त्रिची



आजादी के अमृत काल की ओर ...

भारत के आजादी को अब 76 वर्ष पूरे हो चुके हैं और इस दौरान हमने बहुत कुछ हासिल भी किया है। आज हम कई क्षेत्रों में विकसित देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं। भारत आज प्रौद्योगिकी, उद्यम, शिक्षा, आर्थिक तथा सामाजिक पहलुओं पर काम करते हुए स्वतंत्र होने से लेकर आज तक कई उपलब्धियों को हासिल कर चुका है।

भारत आज कई सारे उत्पादों को निर्यात कर रहा है। आर्थिक दृष्टि से देखें तो भारत 7.5% के साथ सबसे ज्यादा जीडीपी वृद्धि दर वाले देशों में शामिल हो गया है। अभी हाल ही में हुई महंगाई की चपेट में जब पाश्चात्य देश आ गए पर भारत की अर्थव्यवस्था ने यह साबित कर दिया कि अब वह पाश्चात्य देशों पर आश्रित नहीं है। शिक्षा की दृष्टि से देखें तो भारत का साक्षरता दर स्वतंत्रता से अब 18% से लेकर 77% हो गया है। स्वास्थ्य की दृष्टि से देखें तो औसत आयु 32 वर्ष से बढ़कर 70 वर्ष की हो चुकी है।

हमने अंतरिक्ष, परमाणु, विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में भी कई विकसित देशों तक को पीछे छोड़ दिया है। आज कई विकसित देश हमारी तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। वर्ष 2018 से 2022 के बीच भारत ने 19 देशों के 177 सैटेलाइट अपने लॉन्चिंग वेहिकल से लॉन्च किए जिनमें ऑस्ट्रेलिया, स्विट्जरलैंड, जापान, इटली, फ्रांस, इजरायल जैसे विकसित देश भी शामिल

थे। हाल ही में हमने चंद्रयान 3 लॉन्च करके इसी बात की पुनरावृत्ति की। आज देश का इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे कि सड़कें, रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे विश्व स्तर के होते जा रहे हैं। ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में भी देखें तो राष्ट्रीय महामार्ग की संख्या इस प्रकार बढ़ी है कि अब कई जगह की बीच की दूरी घंटों से मिनटों की हो गई है।

इंडियन ऑयल की दृष्टि से देखें तो हम भी हमारे 1959 में हुए जन्म से लेकर आज एक ऐसी कंपनी बन गए हैं जो भारत ही नहीं विश्व स्तर पर सराही जाए। आइओसी हमारे लिए एक धरोहर की तरह जिसने करोड़ों परिवारों के घर में रोशनी लाई। कई लोगों को रोजगार तथा एक सम्मानित जीवन जीने का अधिकार दिया। संस्थापना से लेकर आज हम देश की सबसे बड़ी कंपनी के रूप में सार्वजनिक क्षेत्रों का मोर्चा संभाले हुए हैं। भारत आज हमारी रिफायनिंग की तकनीक की वजह से किसी एक देश या देशों के समूह पर निर्भर नहीं है। यह हाल ही में हुए रशिया यूक्रेन युद्ध के बाद विश्व व्यवस्था में हुई हलचल के बाद साबित कर दिया।

आज हम देश के सबसे बड़े रिफाइनर, मार्केटर तथा तेल एवं गैस का परिवहन करने वाले बन गए हैं। हाल ही में हमने 'फॉर्चून 500' वैश्विक

कंपनियों की सूची में अपने स्थान को भारत की सर्वोत्कृष्ट स्तर पर पहुंचाया है। इसी के साथ हम लगभग 29 सालों से इस सूची के भागीदार हैं। लेकिन आगे बढ़ते हुए हमें और बेहतर बनना होगा। आज पूरा विश्व तथा देश ग्रीन फ्यूचर की ओर देख रहे हैं। हमने भी इस राह पर अपने कदम बढ़ा दिए हैं पर यह सब 'टेक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट, एनवायरमेंट-इकॉनमी बैलेंस' जैसी अनिश्चितताओं से भरा है। हमें 'क्लीनर और ग्रीनर' विकल्पों की ओर और ज्यादा अनुसंधान और विकास करने की

जरूरत है। साथ ही हमें हमारे मूल व्यवसाय को भी ध्यान में रखना होगा।

माननीय कार्यकारी निदेशक श्री शैलेश तिवारी जी के अनुसार भविष्य में पारंपारिक एवं अपारंपरिक दोनों ही ऊर्जा स्रोतों का तालमेल बनाकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। आज हम सिर्फ तेल ही नहीं बल्कि गैस बेस्ड इकॉनमी को भी बढ़ावा दे रहे हैं जो प्रकृति को कोयले तथा डीजल से कम हानि पहुंचाता है और यह एक कड़ी बन सकता है पूरी तरह ग्रीन एनर्जी के इस्तेमाल तक पहुंचने में।

“देश की किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह (भारत में) केवल हिन्दी ही हो सकती है।”

– श्रीमती इंदिरा गांधी



धीरज राजीव वानखडे
सहाय्यक प्रबंधक (प्र. एवं अनु.),
एसआरपीएल चित्तूर

स्वच्छता की जिम्मेदारी

अजनबी 1: स्कूल का लड़का चॉकलेट खाता है और चॉकलेट का आवरण सड़क पर फेंक देता है।

अजनबी 2: एक मजदूर के पास खाने का पार्सल है और खाने के बाद उसने आधा खाना नाली के पास फेंक दिया।

अजनबी 3: एक लापरवाह व्यक्ति सड़क पर कूड़ा फैलाता है।

अजनबी 4: सिगार फेंक दिया।

अजनबी 5: घर के कचरे को सड़क पर अनुचित ढंग से निस्तारित करता है।

बेतरतीब भीड़ की ऐसी सभी लापरवाह हरकतें एक जगह जमा होकर बड़ी गड़बड़ी का कारण बनती है।

अगले दिन सुबह उस गली की सफाई करने वाली महिला अपने बच्चे के साथ चलती है। स्कूल जाने वाला बच्चा अपनी माँ को उदासी से देखता है। कुछ देर बाद वह अपने स्कूल से वापस उस जगह आता है जहां उसकी माँ पोर्टेबल कूड़ेदान से सफाई कर रही होती है। कूड़ा-कचरा निस्तारित करने वाले हर व्यक्ति के पीछे वह बिन अपने हाथों में लेकर चलता है। व्यक्तियों में जागरूकता शुरू हो जाती है और

पोर्टेबल बिन का उपयोग शुरू हो जाता है। ऐसा करते हुए उनका पूरा दिन से लेकर शाम तक निकल जाता है। इस सड़क के पास एक सज्जन व्यक्ति इस लड़के के प्रयास से पिघल गए और शाम को सड़क के दोनों ओर कूड़ेदान की व्यवस्था कर दी। इस बीच उसकी माँ को पड़ोसी माता-पिता / छात्र के माध्यम से पता चला कि वह स्कूल नहीं आया था। स्कूल न जाने पर बेटे को खूब पीटता है। अगले दिन उसकी माँ सड़कें साफ देखकर आश्चर्यचकित रह गईं। उसे पता चलता है कि उसके बेटे की वजह से सड़कें अच्छी बनी हुई हैं। सड़क किनारे कूड़ेदान की व्यवस्था करने वाला व्यक्ति उस लड़के की तस्वीर लेता है जो गंदगी इकट्ठा कर रहा था। वह वह तस्वीर अपनी माँ को दिखाता है। बच्चे की पिटाई से माँ को दुख होता है और तुरंत स्कूल जाती है और उसे प्यार से गले लगा लेती है।

माँ अत्यधिक भावुक हो जाती है और सोचती है कि उसके बेटे ने मूंगा होने के बावजूद उसकी कठिनाइयों के बारे में इतना अच्छा सोचा है।

शिक्षा: धरती माता की प्रत्येक संतान को अपनी स्वच्छता के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।



एस वी डी रेवत
अनुरक्षण प्रबंधक
एसआरपीएल - चेन्नई पंप स्टेशन

स्वैपेबल बैटरियों के लिए यूरोपीय संघ का संघर्ष

यूरोपीय संघ (ईयू) ने इलेक्ट्रॉनिक्स और कारों में स्वैपेबल बैटरियों को अनिवार्य करने वाला कानून पेश करके सतत विकास को बढ़ावा देने और इलेक्ट्रॉनिक कचरे को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। 14 जून के मतदान में, यूरोपीय संसद ने 2027 तक इलेक्ट्रॉनिक्स में आसानी से बदली जाने वाली बैटरियों के पक्ष में भारी मतदान किया। यह कदम इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोटिव उद्योगों में वैश्विक प्रथाओं को प्रभावित करने के साथ-साथ पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए यूरोपीय संघ की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह निबंध समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर इस यूरोपीय संघ कानून के संभावित प्रभाव की पड़ताल करता है।



सकारात्मक प्रभाव:

इलेक्ट्रॉनिक कचरे में कमी: इलेक्ट्रॉनिक्स और कारों में स्वैपेबल बैटरियों को अनिवार्य करने से इलेक्ट्रॉनिक कचरे में काफी कमी आ सकती है, क्योंकि उपभोक्ता पूरे उपकरण का निपटान किए बिना बैटरियों को बदलने में सक्षम होंगे। यह चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांत के अनुरूप है, उत्पादों के जीवनचक्र को बढ़ाता है और उनके पर्यावरणीय पदचिह्न को कम करता है।

संसाधन संरक्षण: स्वैपेबल बैटरियां संसाधनों के कुशल उपयोग को बढ़ावा देती हैं। बैटरियां खराब होने पर पूरी तरह से नए उपकरणों का उत्पादन करने के बजाय, उपयोगकर्ता बैटरियों को बदल सकते हैं, जिससे कच्चे माल और ऊर्जा-गहन विनिर्माण प्रक्रियाओं की मांग कम हो जाती है।

उपभोक्ता बचत: स्वैपेबल बैटरियां उपभोक्ताओं को वित्तीय लाभ प्रदान कर सकती हैं, क्योंकि वे पूरी तरह से नए उपकरण खरीदने के बजाय आसानी से बैटरियां बदल सकते हैं। इस दृष्टिकोण से दीर्घावधि में लागत बचत हो सकती है।

नवाचार और प्रतिस्पर्धा: स्वैपेबल बैटरियों की आवश्यकता निर्माताओं के बीच नवाचार को प्रोत्साहित कर सकती है, जिससे अधिक उन्नत और टिकाऊ बैटरियों का विकास हो सकता है। बैटरी

बाजार में प्रतिस्पर्धा लागत को कम कर सकती है और पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों के उत्पादन को प्रोत्साहित कर सकती है।

कम कार्बन पदचिह्न: इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और कारों के जीवनकाल को बढ़ाकर, कानून विनिर्माण और निपटान से जुड़े ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में योगदान दे सकता है।

चुनौतियाँ:

मानकीकरण: अलग-अलग ब्रांडों और मॉडलों में मानकीकृत स्वैपेबल बैटरी डिज़ाइन स्थापित करना अलग-अलग तकनीकी विशिष्टताओं और फॉर्म कारकों के कारण चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

बुनियादी ढाँचा: स्वैपेबल बैटरियों को बैटरी प्रतिस्थापन के लिए एक सुलभ बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है, जिसे उपभोक्ताओं के लिए सुविधा सुनिश्चित करने के लिए स्थापित करने की आवश्यकता होती है।

प्रारंभिक लागत: जबकि स्वैपेबल बैटरियों से दीर्घकालिक बचत हो सकती है, नए डिज़ाइन, बुनियादी ढाँचे और रीटूलिंग विनिर्माण प्रक्रियाओं को लागू करने से जुड़ी प्रारंभिक लागत हो सकती है।

उपभोक्ता आदतें: उपभोक्ताओं को स्वैपेबल बैटरियों की अवधारणा को अपनाने और

दीर्घकालिक लाभों को समझने के लिए समय की आवश्यकता हो सकती है, क्योंकि इसमें निपटान और उन्नयन की पारंपरिक प्रथा से बदलाव शामिल है।

वैश्विक निहितार्थ:

स्वैपेबल बैटरियों पर यूरोपीय संघ के कानून के आदेश का इसकी सीमाओं से परे व्यापक प्रभाव हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में काम करने वाले निर्माता यूरोपीय संघ के नियमों का पालन करने के लिए समान प्रथाओं को अपना सकते हैं, जिससे अधिक टिकाऊ उत्पादन और उपभोग पैटर्न की ओर वैश्विक बदलाव आएगा।

भारत पर प्रभाव:

जैसा कि भारत सहित दुनिया भर के देश इन नियामक परिवर्तनों पर ध्यान देते हैं, भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोटिव उद्योगों, अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय सतत विकास पर इस कानून के निहितार्थ पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए। भारत में स्वैपेबल बैटरी नियमों को लागू करना देश की टिकाऊ खपत और उत्पादन की प्रतिबद्धता के अनुरूप हो सकता है।

यह कदम इलेक्ट्रॉनिक कचरे को कम करने, चक्रीय

अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने, संसाधनों के संरक्षण और भारत के विनिर्माण क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहित करने में योगदान दे सकता है। भारत खुद को वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोटिव उद्योगों में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर सकता है। इस तकनीक को अपनाने से भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ सकती है, विदेशी निवेश आकर्षित हो सकता है और देश की "मेक इन इंडिया" पहल में योगदान मिल सकता है।

निष्कर्ष:

इलेक्ट्रॉनिक्स और कारों में स्वैपेबल बैटरियों को अनिवार्य करने का यूरोपीय संघ का निर्णय टिकाऊ प्रथाओं, इलेक्ट्रॉनिक कचरे में कमी और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है। हालाँकि कुछ चुनौतियाँ हैं जिनका समाधान करना है,

संसाधन संरक्षण, लागत बचत, नवाचार और कम पर्यावरणीय प्रभाव के संदर्भ में संभावित लाभ इस कानून को हरित भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बनाते हैं। जैसा कि अन्य क्षेत्र समान उपायों पर विचार कर रहे हैं, इस यूरोपीय संघ कानून का प्रभाव यूरोप से कहीं आगे तक बढ़ सकता है, उद्योगों को प्रभावित कर सकता है और वैश्विक स्तर पर उपभोक्ता व्यवहार को आकार दे सकता है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना
देश की उन्नति के लिए आवश्यक है: -

- महात्मा गांधी



कार्तिकेय श्रीवास्तव
सहायक प्रबंधक (ओ एंड एम)
एसआरपीएल - मदुरै

21वीं सदी में डिजिटल नागरिकता: आविर्त दृश्य की नेविगेशन

प्रस्तावना:

21वीं सदी ने संयोजन के एक नए युग का आगमन किया है जिसमें संयोजन और तकनीकी प्रगति के क्षेत्र में बड़ी परिवर्तन हुआ है, जो हमारे बातचीत, शिक्षा और संवाद के तरीकों को बदल दिया है। इस तेजी से बदलते डिजिटल युग में, डिजिटल नागरिकता का अवगतन और अभिवादन बढ़ता जा रहा है। डिजिटल नागरिकता उन अधिकारों, जिम्मेदारियों, और नैतिक आचरणों को समाहित करती है जिन्हें ऑनलाइन क्षेत्र में व्यक्तियों से अपेक्षित किया जाता है। इस निबंध में, हम डिजिटल नागरिकता के महत्व को देखेंगे, उसके घटकों को समझेंगे, और देखेंगे कि यह कैसे हमारे आधुनिक समाज को आकार देने में भूमिका निभाती है।

डिजिटल नागरिकता का महत्व:

दुनिया में जहाँ इंटरनेट ने हमारी जिन्दगी के कपड़ों में खुदाई की है, डिजिटल नागरिकता को समझना और अमल करना और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यहाँ पर कुछ कारण हैं कि यह मायने रखता है:

- 1. ऑनलाइन गोपनीयता:** व्यक्तिगत डेटा को डिजिटल रूप में साझा और संग्रहित किया जाता है, ऐसे में ऑनलाइन गोपनीयता की सुरक्षा की जागरूकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल नागरिकों को समझना चाहिए कि उनका डेटा कैसे उपयोग हो रहा है और वे अपनी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए कदम उठाएं।
- 2. साइबर सुरक्षा और सुरक्षा:** डिजिटल मंच पर साइबर खतरों और ऑनलाइन खतरों से भरपूर है। जिम्मेदार डिजिटल नागरिक न केवल अपनी सुरक्षा की चिंता करते हैं बल्कि दूसरों के लिए भी हानिकारक आचरणों में शामिल नहीं होते हैं, जिससे उन्हें सुरक्षित ऑनलाइन माहौल प्रमोट करने में मदद मिलती है।
- 3. महत्वपूर्ण विचार और मीडिया जागरूकता:** गलत सूचनाओं और फ़ेक न्यूज़ ऑनलाइन तेजी से प्रसारित होती हैं, जो सार्वजनिक मत और निर्णय-लेने पर असर डालती हैं। डिजिटल नागरिकों को महत्वपूर्ण

विचार कौशल विकसित करने की आवश्यकता होती है ताकि वे मान्य स्रोतों को झूठी सूचनाओं से पहचान सकें और एक और अधिक सूचित समाज में सक्रिय योगदान कर सकें।

डिजिटल नागरिकता के घटक:

- 1. डिजिटल अधिकार और जिम्मेदारियाँ:** जैसा कि भौतिक दुनिया में, ऑनलाइन भी व्यक्तियों के अधिकार और जिम्मेदारियाँ होती हैं। इसमें मुफ्त अभिव्यक्ति का अधिकार और घृणा भाषण, साइबर बुलींग, और उत्पीड़न से बचने की जिम्मेदारी शामिल है।
- 2. ऑनलाइन शिष्टाचार:** आदरपूर्ण और शिष्ट व्यवहार ऑनलाइन जगत में भी फैलता है। डिजिटल नागरिक ऑनलाइन अंतरक्रियाओं में अपनी भाषा, भाषा, और व्यवहार में सावधानी बरतकर अच्छे नेटिकेट का अनुसरण करते हैं।
- 3. मीडिया जागरूकता:** मीडिया को कैसे बनाया, वितरित किया और सेवन किया जाता है, यह डिजिटल युग में एक महत्वपूर्ण कौशल है। डिजिटल नागरिक मीडिया सामग्री का समीक्षात्मक मूल्यांकन करते हैं और पक्षपातपूर्ण या भ्रान्तिपूर्ण जानकारी को पहचानते हैं।

निष्कर्ष:

डिजिटल नागरिकता केवल एक शब्द नहीं है; यह एक आचार संहिता है जो हमारे डिजिटल क्षेत्र में व्यवहार को मार्गदर्शित करती है। संयोजन की युग में, एक जिम्मेदार डिजिटल नागरिक होना भौतिक दुनिया में जिम्मेदार नागरिक होने के समान महत्वपूर्ण है। नैतिक मानकों का पालन करके, अच्छे ऑनलाइन शिष्टाचार का अभ्यास करके, और सकारात्मक परिवर्तन के लिए डिजिटल मंचों का उपयोग करके, हम सभी के लाभ के लिए एक जीवंत और जिम्मेदार डिजिटल समाज का निर्माण करते हैं।



अर्द्धांकी साई चरण
सहायक प्रबन्धक (टी एवं आई)
दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स, मद्रुरै

महिला सशक्तिकरण

लैंगिक समानता, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, एक मानव अधिकार है। एक महिला सम्मान और स्वतंत्रता से जीने की हकदार है। विकास को आगे बढ़ाने और गरीबी कम करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना भी एक अनिवार्य उपकरण है। सशक्त महिलाएँ पूरे परिवार और समुदायों के स्वास्थ्य और उत्पादकता और अगली पीढ़ी के लिए बेहतर संभावनाओं में योगदान देती हैं।



लैंगिक समानता के महत्व को आठ सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों में से एक के रूप में शामिल किए जाने से रेखांकित किया गया है। लैंगिक समानता को अन्य सात लक्ष्यों को प्राप्त करने की कुंजी के रूप में स्वीकार किया गया है। फिर भी महिलाओं के खिलाफ भेदभाव - जिसमें लिंग आधारित हिंसा, आर्थिक भेदभाव, प्रजनन स्वास्थ्य असमानताएं और हानिकारक पारंपरिक प्रथाएं शामिल हैं - असमानता का सबसे व्यापक और लगातार रूप बना हुआ है।



सभ्यता की शुरुआत से ही महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझे जाने के बड़े पैमाने पर प्रमाण मिले हैं। लगभग हर देश, चाहे वह कितना भी प्रगतिशील क्यों न हो, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार का इतिहास रखता है। इसने अंततः महिलाओं को समाज में अपनी स्थिति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया है और यहां तक कि दुनिया भर की महिलाओं को आज की स्थिति तक पहुंचने के लिए विद्रोही होने के लिए प्रेरित किया है। तब से, महिलाएं लैंगिक समानता के बारे में मुखर रही हैं और उस समानता को हासिल करने के लिए खुद को सशक्त बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण और स्वायत्तता तथा उनकी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य स्थिति में सुधार अपने आप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

और अपनी शक्ति एवं प्रभाव की कमी के परिणामस्वरूप महिलाओं को अपने जीवन, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए खतरों का सामना करना पड़ रहा है।

दुनिया के अधिकांश क्षेत्रों में, महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम औपचारिक शिक्षा प्राप्त होती है, और साथ ही, महिलाओं के ज्ञान, क्षमताओं और मुकाबला करने के तंत्र को अक्सर मान्यता नहीं मिलती है। शक्ति संबंध जो महिलाओं को स्वस्थ और पूर्ण जीवन प्राप्त करने में बाधा डालते हैं, वे समाज के कई स्तरों पर, सबसे व्यक्तिगत से लेकर अत्यधिक सार्वजनिक तक, संचालित होते हैं।

इसके अलावा, सतत विकास की उपलब्धि के लिए यह आवश्यक है। उत्पादक और प्रजनन जीवन में महिलाओं और पुरुषों दोनों की पूर्ण भागीदारी और भागीदारी आवश्यक है, जिसमें बच्चों की देखभाल और पोषण और घर के रखरखाव की साझा जिम्मेदारियाँ भी शामिल हैं। दुनिया के सभी हिस्सों में, काम के अत्यधिक बोझ

शिक्षा महिलाओं को विकास प्रक्रिया में पूर्ण रूप से भाग लेने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ सशक्त बनाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। 40 साल से भी पहले, मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा में कहा गया था कि "हर किसी को शिक्षा का अधिकार है"। लेकिन दुनिया भर के देशों द्वारा बुनियादी शिक्षा तक पहुंच में उल्लेखनीय विस्तार के उल्लेखनीय प्रयासों के

बावजूद, दुनिया में लगभग 960 मिलियन निरक्षर वयस्क हैं, जिनमें से दो-तिहाई महिलाएं हैं। दुनिया के एक-तिहाई से अधिक वयस्कों, जिनमें से अधिकांश महिलाएं हैं, के पास मुद्रित ज्ञान, नए कौशल या प्रौद्योगिकियों तक पहुंच नहीं है जो उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करेगी और उन्हें सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को आकार देने और अनुकूलित करने में मदद करेगी।

देश में सभी बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आंदोलन शुरू किया गया है। सरकार जिला टास्क फोर्स और ब्लॉक टास्क फोर्स का गठन कर इस योजना को सफलतापूर्वक बढ़ावा देने में सक्षम है। यह योजना 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत जिले में रुपये की प्रारंभिक धनराशि के साथ शुरू की गई थी। 100 करोड़। इस योजना के शुरू होने से पहले, 2001 में पानीपत का बाल लिंग अनुपात 808 और 2011 में 837 था। इस योजना के शुरू होने के बाद पानीपत के बाल लिंग अनुपात में दिन-ब-दिन सुधार हो रहा है। कार्यक्रम के बारे में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में बड़े पैमाने पर प्रचार किया गया है, इस योजना का लोगो सरकारी भवनों जैसे राष्ट्रीय राजमार्ग 44 के खंभे, पानीपत जिला न्यायालय, बस स्टैंड और पानीपत जिले के रेलवे स्टेशन आदि में बहुत आम है।

देशों को प्रत्येक समुदाय और समाज में राजनीतिक प्रक्रिया और सार्वजनिक जीवन के सभी स्तरों पर महिलाओं की समान भागीदारी और न्यायसंगत प्रतिनिधित्व के लिए तंत्र स्थापित करने और महिलाओं

को उनकी चिंताओं और जरूरतों को स्पष्ट करने में सक्षम बनाने के लिए कार्य करना चाहिए। सरकार और संगठनों को महिलाओं के खिलाफ भेदभाव करने वाली सभी प्रथाओं को खत्म करने का प्रयास करना चाहिए; महिलाओं को उनके अधिकारों को स्थापित करने और उन्हें साकार करने में सहायता करना, जिनमें प्रजनन और यौन स्वास्थ्य से संबंधित अधिकार भी शामिल हैं। महिलाओं की पारंपरिक व्यवसायों से परे आय अर्जित करने की क्षमता में सुधार करने, आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल करने और श्रम बाजार और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों तक महिलाओं की समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए उचित उपाय अपनाना। साथ ही, समाज में महिलाओं के लिए हिंसा और सुरक्षा एक बड़ा खतरा है। घरेलू हिंसा, बलात्कार आदि दिन-ब-दिन चिंताजनक रूप से बढ़ रहे हैं। और भी, क्योंकि महिलाएं बोलने से डरती हैं। इसी तरह, जो महिलाएं समान काम करती हैं उन्हें अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में कम वेतन मिलता है। किसी को उसके लिंग के आधार पर समान काम के लिए कम भुगतान करना सर्वथा अनुचित और लैंगिक भेदभाव है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि महिला सशक्तिकरण किस प्रकार समय की मांग है। हमें इन महिलाओं को अपने लिए बोलने और कभी भी अन्याय का शिकार न होने के लिए सशक्त बनाने की आवश्यकता है।

ऐसे कई संगठन और संस्थान हैं जो महिलाओं की वकालत कर रहे हैं, कानूनी और नीतिगत सुधारों और लिंग-संवेदनशील डेटा संग्रह को बढ़ावा दे रहे हैं, और महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार और जीवन में उनकी पसंद का विस्तार करने वाली परियोजनाओं का

समर्थन कर रहे हैं। यहां तक कि विभिन्न देशों की सरकारें भी महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं। ये स्पष्ट संकेत हैं कि समाज को आकार देने वाली सभी ताकतें सामूहिक रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने का समर्थन कर रही हैं। हालाँकि, कई प्रतिकूलताएँ एक पूर्ण लैंगिक निष्पक्ष समाज प्राप्त करने के रास्ते को अवरुद्ध कर रही हैं।

इसके अलावा, आज "महिला सशक्तिकरण" शब्द के अलग-अलग अर्थ हैं, जिससे विभिन्न संप्रदायों में विश्वास पैदा हुआ है। सशक्तिकरण अलग-अलग मानस के लिए अलग-अलग अर्थ रखता है और यह विचलन, कल्पना के विरुद्ध तथ्यों की यह समझ, विभिन्न संप्रदायों, संघों और समझ के लोगों की व्याख्या का यह तरीका "महिला सशक्तिकरण" की बुनियादी समझ को और अधिक जटिल बना रहा है। हालाँकि, प्रत्येक महिला के लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि उन्हें किसी बाहरी पार्टी द्वारा दिए जाने के बजाय स्वयं सशक्तिकरण प्राप्त करना चाहिए और महिलाओं को अपने जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता के साथ-साथ उन पर कार्य करने में भी सक्षम होना चाहिए।

महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से ऊपर उठाने की दिशा में काफी प्रगति हुई है, लेकिन यह अभी भी एक खुली प्रक्रिया है। अनेक चल रही बातों के प्रकाश में, एक स्पष्ट दृष्टि उभरती है, प्रत्येक

पात्र के सशक्तिकरण की दृष्टि। भले ही नए युग की महिला कहीं अधिक सशक्त है, लेकिन जब हिंसा या किसी अभूतपूर्व प्रतिगामी बुराई के मामले सामने आते हैं तो उसकी प्रगति रुक जाती है। इसलिए, जब कोई मूल्यांकन करता है कि महिला सशक्तिकरण एक मिथक है या वास्तविकता, तो यह इतना आसान नहीं है क्योंकि कई बार महिला सशक्तिकरण एक भ्रम लगता है जिसे कुछ लोगों ने वास्तविकता में बदल दिया है लेकिन कई लोगों के लिए अज्ञात क्षेत्र बना हुआ है। हमें, एक समाज के रूप में, लैंगिक बहस को समानता में लाने के लिए अब तक किए गए हर प्रयास की सराहना करने की जरूरत है और यह समझने की जरूरत है कि इस लड़ाई को अधिक महत्व क्यों नहीं दिया गया है और इसे उचित ठहराया जाना पूरी तरह से महत्वपूर्ण है। आज एक महिला को सशक्त बनाना कल के लिए एक प्रगतिशील समाज का निर्माण करेगा और किसी भी लैंगिक समानता चर्चा का विश्लेषण करने में यह आशा की किरण हमारी प्रेरणा होनी चाहिए



पेरनाटि मोनश्री
पत्नी पेर्नाटि राजा
एस. आर. पि . एल. मदुरै

चिट्ठियों की यादें

चिट्ठियों की राहों में बसी यादें,
कभी हँसती, कभी रुलाने वाली बातें।
पारदर्शी कागज़ में छुपे रिश्तों की बातें,
बीते लम्हों की मीठी यादें ।
दूर दिल से मिलने की आशाये,
चिट्ठियों के जरिए बिताए वक़्त की ताज़ा होती यादें ।
बूँद-बूँद खत में छुपी दिल की बातें,
आपसी दूरियों को कम करती यादे।
कभी मुस्कुराते हैं, कभी गुनगुनाते ,
चिट्ठियों के ज़रिए रिश्तों की बांधे ।
चिट्ठी की खुशबू में बसी वो यादें,
जो हमारे दिल की गहराईयों में समाई यादें ।
पत्रों पर छपी वो जुदाई की बातें,
चिट्ठियों की मिठास में बसी वो मीठी बातें।



आमित कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रचालन प्रबंधक
दक्षिणी क्षेत्र पाइपालाइन्स, मनाली

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय हृदय से
बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।

- महात्मा गांधी

कहानी

सकारत्मकता का महत्व

एक दिन एक किसान का बैल कुएँ में गिर गया। वह बैल घंटों ज़ोर-ज़ोर से रोता रहा और किसान सुनता रहा और विचार करता रहा कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

अंततः उसने निर्णय लिया कि चूंकि बैल काफी बूढ़ा हो चूका था अतः उसे बचाने से कोई लाभ होने वाला नहीं था और इसलिए उसे कुएँ में ही दफना देना चाहिए।।

किसान ने अपने सभी पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया सभी ने एक-एक फावड़ा पकड़ा और कुएँ में मिट्टी डालनी शुरू कर दी।

जैसे ही बैल कि समझ में आया कि यह क्या हो रहा है वह और ज़ोर-ज़ोर से चीख चीख कर रोने लगा और फिर ,अचानक वह आश्चर्यजनक रूप से शांत

हो गया। सब लोग चुपचाप कुएँ में मिट्टी डालते रहे तभी किसान ने कुएँ में झाँका तो वह आश्चर्य से सन्न रह गया..

अपनी पीठ पर पड़ने वाले हर फावड़े की मिट्टी के साथ वह बैल एक आश्चर्यजनक हरकत कर रहा था वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था।

जैसे-जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़ों से मिट्टी गिराते वैसे-वैसे वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को गिरा देता और एक सीढ़ी ऊपर चढ़ आता जल्दी ही सबको आश्चर्यचकित करते हुए वह बैल कुएँ के किनारे पर पहुंच गया और फिर कूदकर बाहर भाग गया ।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता:

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद



विक्रान्त कुमार
मनवा संसाधन प्रबंधक
दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स, चेन्नई

विज्ञान के क्षेत्र में बढ़ता भारत का दबदबा

अनादि काल से भारत में विज्ञान की परम्परा विद्यमान रही है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से मिले साक्ष्य इस बात का प्रमाण हैं कि उन लोगों में विज्ञान की समझ थी। प्राचीन काल में भारत में विज्ञान की सबसे बड़ी उपलब्धियों में महर्षि सुश्रुत के द्वारा खोजी गई शल्य चिकित्सा है, दुनिया आज उन्हें 'फादर ऑफ सर्जरी' मानती है। नागार्जुन ने रसायन विज्ञान को जन्म दिया। मनुष्य और विज्ञान का विकास एक साथ होता है। वेबर कहते हैं कि- 'दर्शन के बिना विज्ञान वैसा है जैसे एकता या संगठन के बिना कोई समूह, आत्मा के बिना शरीर, इसी प्रकार विज्ञान के बिना दर्शन ऐसा है, जैसे शरीर के बिना आत्मा।' धातु विज्ञान, वस्त्र निर्माण, भवन निर्माण और परिवहन व्यवस्था का विकास सिन्धु सभ्यता के समय हो चुका था। भारत की प्राचीनकाल की उपलब्धियों से लेकर चन्द्रयान के प्रक्षेपण तक सफलताओं का एक लम्बा इतिहास रहा है। अमेरिका के 'नेशनल साइंस फाउंडेशन' के साइंस एंड इंजीनियरिंग इंडिकेटर्स 2022 की रिपोर्ट के अनुसार भारत वैज्ञानिक प्रकाशन के क्षेत्र में विश्व में तीसरे स्थान पर है। भारत ने विज्ञान के सभी क्षेत्रों में कृतिमान स्थापित किया है लेकिन आज हम विज्ञान की जिन प्रमुख उपलब्धियों पर बात करेंगे वे कुछ इस प्रकार हैं:-

सूचना – संचार के क्षेत्र में उपलब्धियाँ:

21वीं सदी को सूचनाओं का युग कहना कोई जल्दबाजी नहीं होगा। भारत के वैज्ञानिकों ने संचार के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। बात ऑप्टिकल फाइबर की हो, वाईफाई अथवा 5जी की या

फिर सुपर कंप्यूटर, क्वांटम कम्प्यूटिंग की; आज सूचना-संचार के विकास से भारत ई-प्रशासन, डिजिटल इकोनॉमी, ई-लार्निंग, मौसम पूर्वानुमान में अब्बल है। संचार के विकास ने रोजगार सृजन के द्वारा खोल दिया है। भारत का आईटी सेक्टर दुनिया को राह दिखा रहे हैं। सूचना संचार ने मनुष्य को आपस में जोड़ने के साथ सामाजिक, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है।

कृषि के क्षेत्र में उपलब्धियाँ:

भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। भारत में कृषि के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग से उल्लेखनीय प्रगति हुई है। भारत ने आज कृषि के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर खुद को स्थापित किया है। वर्तमान में भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर के साथ अनाज निर्यातक देशों में एक है। भारत विश्व में दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में प्रथम, दाल खेती योग्य भूमि में प्रथम और कपास के संकर किस्मों को विकसित करने में पहला स्थान रखता है। भारत विश्व में कुल उर्वरक उपयोग में चौथा स्थान रखता है। परजीवी खेती, फर्टिगेशन, कृत्रिम बीज, अनुवांशिक संवर्धित बीज को बढ़ाने में विज्ञान ने महत्पूर्ण भूमिका निभाई है। भारत आज पूरी तरह से जैविक खेती की ओर बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों ने भारतीय कृषि को रोजगार के साथ जोड़ दिया है। आज कृषि के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं।

अंतरिक्ष के क्षेत्र में उपलब्धियाँ:

आकाश में उड़ना और धरातल पर बात करना किसे

पसंद नहीं है, इन्हीं ख्यालों को पूरा करने के लिए हमारे देश के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने क्या कुछ नहीं किया है। भारत एशिया का पहला ऐसा देश है जिसने मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचने में सफलता प्राप्त की है। भारत दुनिया के लगभग 70 देशों के उपग्रहों को लॉन्च किया है। भारत के पास पीएसएलवी और जीएसएलवी जैसे अत्यंत सफल प्रक्षेपण यान हैं। भारत ने उपग्रह को ध्रुवीय कक्ष में स्थापित करके कीर्तिमान कायम किया है। भारत ने रोहिणी, एप्पल जैसे उपग्रह को स्थापित किया है। भारत का उपग्रह प्रक्षेपण के मामले में विश्व में चौथा स्थान है। भारत के अंतरिक्ष प्रोग्रामों की प्राथमिकता देश को विकसित करना और आत्मनिर्भर बनाना है।

अभी हाल के दिनों में एक बढ़कर एक उपलब्धि हासिल किया है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :-

चंद्रयान/Chandrayaan-3

चंद्रयान-3 चंद्रयान-2 का अनुवर्ती मिशन है, जो चंद्र सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और घूमने की संपूर्ण क्षमता प्रदर्शित करता है। इसमें लैंडर और रोवर कॉन्फिगरेशन शामिल है। इसे LVM3 द्वारा SDSC SHAR, श्रीहरिकोटा से लॉन्च किया जाएगा। प्रोपल्शन मॉड्यूल लैंडर और रोवर कॉन्फिगरेशन को 100 किमी चंद्र कक्षा तक ले जाएगा। प्रणोदन मॉड्यूल में चंद्र कक्षा से पृथ्वी के वर्णक्रमीय और ध्रुवीय मीट्रिक माप का अध्ययन करने के लिए रहने योग्य ग्रह पृथ्वी (SHAPE) पेलोड का स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री है।

चंद्रयान-3 के मिशन उद्देश्य हैं:

चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और नरम लैंडिंग का प्रदर्शन करना

रोवर को चंद्रमा पर घूमते हुए प्रदर्शित करना और यथास्थान वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करना।

सोलर मिशन आदित्य-L1

आदित्य-एल1, 1.5 मिलियन किलोमीटर की दूरी से सूर्य का अध्ययन करने वाला पहला अंतरिक्ष आधारित वेधशाला श्रेणी का भारतीय सौर मिशन है। L1 बिंदु तक पहुँचने में इसे लगभग 125 दिन लगेंगे।

एस्ट्रोसैट (AstroSat- वर्ष 2015) के बाद आदित्य-एल1 भी इसरो का दूसरा खगोल विज्ञान वेधशाला-श्रेणी मिशन है।

इस मिशन की यात्रा भारत के पिछले [मार्स ऑर्बिटर मिशन](#), मंगलयान की तुलना में काफी छोटी है।

अंतरिक्ष यान को सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के लैग्रेंजियन बिंदु 1 (L1) के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा में स्थापित करने की योजना है।

दुनिया की पहली 'इलेक्ट्रिफाइड फ्लेक्स फ्यूल' कार लांच ।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में दुनिया की पहली इलेक्ट्रिफाइड फ्लेक्स फ्यूल कार को लॉन्च किया। अभी इस कार के प्रोटोटाइप को लॉन्च किया गया है।

यह दुनिया की पहली कार है, जो पूरी तरह से एथेनॉल से चलेगी। टोयोटा इनोवा हाइब्रिड कार को E100 ग्रेड दिया गया है, जो पूरी तरह से वैकल्पिक ईंधन से चलने में सक्षम है।

इस कार में सेल्फ-चार्जिंग लीथियम-आयन बैटरी पैक इंस्टाल किया गया है जो कार को इलेक्ट्रिक व्हीकल

. (EV) मोड पर स्टार्ट करने में मदद करने के लिए पर्याप्त पॉवर जेनरेट करेगा.

15 रुपये प्रति लीटर आयेगा खर्च: -

केंद्रीय मंत्री गडकरी के अनुसार, पूरी तरह से एथेनॉल से चलने वाली कार से 40% बिजली भी पैदा होगी। ऐसे में यह हमें पेट्रोल की तुलना में 15 रुपये प्रति लीटर ही पड़ेगा. उन्होंने आगे बताया कि एथेनॉल 60 रुपये की दर पर है जबकि पेट्रोल 120 रुपये प्रति लीटर है.

21वीं सदी में देश को विकसित राष्ट्र बनाने का एकमात्र विकल्प विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी है। विज्ञान

हमारे समाज एवं संस्कृति का हिस्सा है। मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से कठिन से कठिन कार्य को सरल बना लिया है। आज देश की तरक्की के पैमाने का निर्धारण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर निर्भर करता है। जो देश विज्ञान के क्षेत्र में जितना उन्नति करेगा उसकी अर्थव्यवस्था उतनी ही मजबूत होगी। विज्ञान को पृथक कर किसी समाज या राष्ट्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।



अजय प्रकाश विश्वकर्मा
कार्यालय सहायक
दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स, चेन्नई मुख्यालय

“मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता”:-

-आचार्य विनोबा भावे

हिन्दी मुहावरें /Hindi Muhaavare

नमस्कार, दोस्तों आज मैं आपको किस आर्टिकल में बताऊंगा Hindi Muhaavare with meaning and sentence on topic तो आज हम जानेंगे बौट से Hindi Muhaavare (हिन्दी मुहावरे)। इन मुहावरों को अंग्रेजी में Proverbs भी कहा जाता है। तो अब आइए कुछ हिन्दी मुहावरों का आनंद लेते हैं :-

मुहावरा: आँख का तारा

अर्थ: बहुत प्यारा

वाक्य प्रयोग: यह बच्चा मेरी आँखों का तारा है।

मुहावरा: खून ठण्डा होना

अर्थ: उत्साह से रहित होना या भयभीत होना

वाक्य प्रयोग: आतंकवादियों को देखकर मेरा तो खून ठण्डा पड़ गया।

मुहावरा: गधे को बाप बनाना

अर्थ: काम निकालने के लिए मूर्ख की खुशामद करना

वाक्य प्रयोग : कार्तिक गधे को बाप बनाना अच्छी तरह जानता है।

मुहावरा : घाट-घाट का पानी पीना

अर्थ : हर प्रकार का अनुभव होना

वाक्य प्रयोग : मुन्ना घाट-घाट का पानी पिए हुए है, उसे कौन धोखा दे सकता है।

मुहावरा : प्राणों की बाजी लगाना

अर्थ : जान की परवाह न करना

वाक्य प्रयोग : चिंता मत करो। प्राणों की बाजी लगाकर वह तुम्हारी रक्षा करेगा।

मुहावरा : धब्बा लगना

अर्थ : कलंकित करना

वाक्य प्रयोग : मोहन ने चोरी करके खुद पर धब्बा लगा लिया।

प्रतीक का संकल्प

प्रतीक गर्मी की छुट्टियों बिताने नानी का गाँव बेगूसराय (बिहार) गया हुआ था। वहाँ- बहुत सारे हमउम्र उसके दोस्त बन गए। चूंकि प्रतीक चेन्नई शहर में रहता था जहाँ उसकी जिंदगी स्कूल, पार्क तथा एक फ्लैट तक ही सीमित थी, गाँव की हर चीजे उसकी उत्सुकता बढ़ा रही थी। यहाँ पूरा गाँव ही उसे घर की तरह लग रहा था। यहाँ आज भी लोग चापाकल से पानी निकाल कर घर में भरकर रखते थे, घरा का पानी पीकर प्रतीक और उत्साहित हो गया तथा दोस्तों के साथ उस घरा में पानी भरने लगा। परंतु मिट्टी का घरा शहर के धातु के बर्तन जितना मजबूत होते नहीं है, प्रतीक का पैर फिसल गया और घरा से जा टकराया जिससे घरा टूट गया। प्रतीक बहुत निराश हुआ और सोचने लगा ऐसा बर्तन रखना ही क्यों जो आसानी से टूट जाए। प्रतीक और उसके सारे दोस्त डर रहे की अब तो उनकी खैर नहीं नानी अब डांट लगाएगी।

प्रतीक सब बच्चों के साथ नानी के पास गया तथा पूछा नानी आप प्लास्टिक की बोतल में पानी क्यों नहीं रखती हो देखो ये मिट्टी का घरा टूट गया। नानी ने समझाया बेटे प्लास्टिक हमारी सेहत के लिए अच्छा नहीं होता इसलिए हमें प्लास्टिक का उपयोग यथासंभव कम करना चाहिए। क्यूंकी प्लास्टिक के कारण फैलने वाला प्रदूषण लगभग असाध्य बन गया है।

नानी ने समझाते हुए बताया की प्लास्टिक आजकल दैनिक जीवन के हर कार्य में इस्तेमाल किया जाता है। पहले हम मिट्टी के कुल्हर में चाय पीते थे,

आजकल प्लास्टिक के प्याले आ गए। पहले स्टील या पीतल के ग्लास में पानी पीते थे, आजकल प्लास्टिक के ग्लास आ गए। पहले भोजपत्र से बने थाल मे भोज हुआ करता था या केला के पत्ते पे भोज हुआ करता था, परंतु आजकल थाल भी प्लास्टिक के आ गए। हलाकी भारत के दक्षिण प्रांत में अभी भी केले के पते में खाने का प्रचलन है किन्तु देश के अन्य प्रांतों में भोज के लिए प्लास्टिक की थाली का उपयोग बहुत तेजी से बढ़ा है। इतना ही नहीं, थैला का जगह पॉलिथीन ले लिया, लोटा- मग का जगह प्लास्टिक का बोतल ने ले लिया। यहाँ तक की तुमलोगों के खिलौने तो ज्यादातर प्लास्टिक के ही मिलते है।

सारे बच्चे ध्यान से नानी की बाली को सुन रहे थे, तभी प्रतीक ने पूछा- नानी माँ प्लास्टिक से बने सामान तो हमारे कामों को आसान कर देता है तो हम क्यों नहीं करे इसका इस्तेमाल ?

नानी मुस्करायी और कहा की बच्चों ये सच है की प्लास्टिक दैनिक जीवन के बहुत कार्यों को आसान कर देता है, परंतु इसके फायदे से ज्यादा नुकसान ही हैं। प्लास्टिक का उपयोग करना आसान है किन्तु इसे नस्ट करना बहुत ही कठिन काम है। इसे साया या गलाया नहीं जा सकता, ये मिट्टी के उर्वरता को बहुत नुकसान पहुंचाता है। इसे जला कर भी समाप्त नहीं किया जा सकता है, इसे जलाने से निकलने वाली गैस हमारे लिए बहुत हानिकारक है तथा यह ओजोन परत को भी नुकसान पहुंचाती है। प्लास्टिक से सबसे ज्यादा जो नुकसान दिखता है वो

है जल प्रदूशन। जल अनेक तरह से प्रभावित हो जाता है। सबसे चिंताजनक बात यह है की आज नदी, तालाब, समुद्र आदि में प्रचुर मात्रा में प्लास्टिक पाया जाता है जो जलीय जीव के जीवन के लिए संकट बन गया है। लोग प्लास्टिक को या उससे बने समान को नाली में फेंक देते हैं जिससे नालियाँ जाम हो जाती हैं तथा जलजमाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है। यह प्लास्टिक नाले से होते हुए नदी के रास्ते समुद्र पहुँच जाती है। समुद्र विविधताओं का खान है। समुद्र में कई प्रकार के जीव रहते हैं। प्लास्टिक, समुद्र के खारेपन के कारण टूट जाता है जिसे माउलियों और अन्य जलीय जीव निगल जाते हैं और उनके प्राण संकट में पर जाते हैं।

प्लास्टिक के कारण कई अन्य जीव जन्तु के भी प्राण संकट में पर जाते हैं। एक बार एक गाय को प्लास्टिक से बने बैग में कुछ खाना नजर आया, गाय प्लास्टिक से खाना को अलग नहीं कर पाई एवं प्लास्टिक सहित उस खाने को निगल गई जिससे उसके पेट में दर्द उठा एवं वो मारनाशन हो गई, बाद में उसके पेट का ऑपरेशन कर थैली निकाल

कर उसका जान बचाया गया। बच्चों यह घटना पेपर में भी प्रकाशित हुई थी।

प्लास्टिक के बने बर्तन में पानी चाय या कोई अन्य गरम पदार्थ रख कर खाने से कर्करोग (कैंसर) जैसी भयानक बीमारी होने का खतरा रहता है।

अतः हमें प्लास्टिक के उपयोग से बचना चाहिए एवं वातावरण को बचाने में सहयोग करना चाहिए, क्यूंकी पर्यावरण संरक्षित रहेगा तभी हमारा भविष्य भी सुरक्षित रहेगा।

प्रतीक और सारे बच्चे शांति से नानी की बातें सुन रहे थे। तभी प्रतीक ने कहा नानी हम आज से ये संकल्प करते हैं की एक बार उपयोग होने वाले प्लास्टिक बिल्कुल भी इस्तेमाल नहीं करेंगे तथा प्लास्टिक से बने अन्य समान का उपयोग अपने जीवन में यथासंभव कम करेंगे।

प्रतीक के माता पिता बरामदे में बैठ कर नानी और नाती का संवाद सुन रहे थे तथा मन ही मन सोच रहे थे हम ना सिर्फ प्रतीक के संकल्प को पूरा करेंगे बल्कि चेन्नई में हमारे सहकर्मी तथा परोसियों को भी जागरूक करेंगे।



अभिनव कुमार
प्रचालन प्रबंधक
चेन्नई पम्प स्टेशन

आओं ! सीखें हिंदी। Come, let us learn Hindi

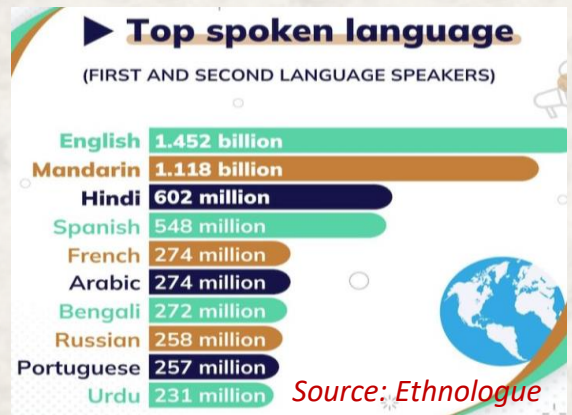
Meaning with Hindi pronunciation of words	
Words	अर्थ (Arth)
Print	छापना (Chhapana)
Call	बुलाना (Bulana)
Enter	प्रवेश करना (Pravesh Karana)
Keep	रखना (Rakhanaa)
Pay	चुकाना (Chukana)
Sit	बैठना (Baithana)
Arrive	पहुचना (Pahuchana)
Calculate	गणना करना (Gadana karana)
Independent	स्वतंत्र (Svtantra)
Bring	लाना (laana)
Ask	पुछना (Puchhana)
Premises	परिसर (Parisar)
Inform	सूचित करना (Suchit Karana)
Activities	गतिविधियाँ (Gatividhiyaan)
Reference	संदर्भ (Sandarbh)
Program	कार्यक्रम (Karyakram)
Objectives	उद्देश्य (Uddeshya)
Change	परिवर्तन (Parivartan)
Appreciate	प्रशंसा करना (Pranshansaa Karana)
Impact	प्रभाव (Prabhav)

हिंदी भाषा के रोचक तथ्य

Interesting facts of Hindi language

- हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि का प्रयोग 8वीं- 9वीं सदी से आरंभ हुआ तथा 10वीं से 12 वीं सदी के बीच इस लिपि से उत्तर भारत के अधिकांश आधुनिक लिपियों का विकास हुआ।
- 14 सितंबर 1949 को भारत सरकार ने हिंदी भाषा को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया। इसी के उपलक्ष्य में हम 14 सितंबर को "हिन्दी दिवस" मनाते हैं।
- **2019** में 615 मिलियन बोलने वालों के साथ हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। 1,132 मिलियन बोलने वालों के साथ अंग्रेजी को सूची में शीर्ष पर बताया गया है। चाइन्स मंदारिन 1,117 मिलियन वक्ताओं के साथ दूसरे स्थान पर है

स्रोत:- विश्व भाषा डेटाबेस एथनोलॉग के 22वें संस्करण



- हिंदी फिजी की एक आधिकारिक भाषा है और हिंदी को सूरीनाम, गुयाना, मॉरीशस और त्रिनिदाद और टोबैगो में एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- हिंदी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर की अपनी स्वतंत्र और विशिष्ट ध्वनि होती है, परिणामस्वरूप, हिंदी शब्दों का उच्चारण ठीक वैसे ही किया जाता है जैसे वे लिखे जाते हैं, जिससे हिंदी भाषा सीखना आसान हो जाता है।
- बिहार भारत का पहला राज्य है, जिसने वर्ष 1881 में उर्दू के स्थान पर हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा घोषित किया।
- अंग्रेजी ने हिंदी से बहुत से शब्द उधार लिए हैं, जैसे :-

उदाहरणों के तौर पर जैसे :- अवतार, बंदना, बंगला, डोंगी, गुरु, जंगल, खाकी, कर्म, लूट, मंत्र, निर्वाण, पंच, पजामा, शर्बत, शैम्पू, ठग, आंधी और योग शामिल हैं।

दुनिया की सबसे मशहूर ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी हर साल भारतीय शब्दों को जगह दे रही है। जैसे आत्मनिर्भरता, बापू, सूर्य नमस्कार, आधार, नारी शक्ति और अच्छा जैसे शब्दों को भी शामिल किया है।

2017 में ऑक्सफोर्ड ने करीब 70 भारतीय शब्दों को शामिल किया था, जिनमें से 33 से ज्यादा हिंदी के थे. 'अरे यार!', भेलपुरी, चूड़ीदार, ढाबा, बदमाश, चुप, फंडा, चाचा, चौधरी, चमचा, दादागिरी, जुगाड़, पायजामा, कीमा, पापड़, करी, चटनी, अवतार, चीता, गुरु, जिमखाना, मंत्र, महाराजा, मुगल, निर्वाण, पंडित, ठग, बरामदा जैसे शब्द पहले से ही शामिल हैं।

रहने योग्य जलवायु के लिए : शुद्ध शून्य प्रतिबद्धताएं

नेट जीरो क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?

सीधे शब्दों में कहें तो नेट जीरो का मतलब है कि हम वातावरण में कोई नया उत्सर्जन नहीं जोड़ रहे हैं। उत्सर्जन जारी रहेगा, लेकिन वायुमंडल से समतुल्य मात्रा को अवशोषित करके इसे संतुलित किया जाएगा।

व्यावहारिक रूप से हर देश जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते में शामिल हो गया है, जिसमें वैश्विक तापमान को पूर्व-औद्योगिक युग के स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस ऊपर रखने का आह्वान किया गया है। हालाँकि, यदि हम जलवायु परिवर्तन का कारण बनने वाले उत्सर्जन को बाहर निकालना जारी रखते हैं, तो तापमान 1.5 से भी अधिक बढ़ जाएगा, जिससे हर जगह लोगों के जीवन और आजीविका को खतरा होगा।

यही कारण है कि बढ़ती संख्या में देश अगले कुछ दशकों के भीतर कार्बन तटस्थता, या "नेट जीरो" उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धताएं बना रहे हैं। यह एक बड़ा काम है, जिसके लिए अभी से महत्वाकांक्षी कार्रवाई शुरू करने की आवश्यकता है।

2050 तक नेट जीरो का लक्ष्य है। लेकिन देशों को यह भी प्रदर्शित करने की ज़रूरत है कि वे वहां कैसे पहुंचेंगे। नेट-शून्य तक पहुंचने के प्रयासों को अनुकूलन और लचीलेपन उपायों और विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्तपोषण जुटाने के साथ पूरक किया जाना चाहिए।

तो दुनिया नेट जीरो की ओर कैसे बढ़ सकती है?

अच्छी खबर यह है कि नेट जीरो तक पहुंचने के लिए तकनीक मौजूद है - और यह सस्ती है।

एक प्रमुख तत्व स्वच्छ ऊर्जा के साथ अर्थव्यवस्थाओं को शक्ति प्रदान करना है, प्रदूषण फैलाने वाले कोयले - और गैस और तेल से चलने वाले बिजली स्टेशनों - को पवन या सौर फार्म जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से बदलना है। इससे कार्बन उत्सर्जन में नाटकीय रूप से

कमी आएगी। साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा अब न केवल स्वच्छ है, बल्कि अक्सर जीवाश्म ईंधन की तुलना में सस्ती भी है। नवीकरणीय ऊर्जा द्वारा संचालित विद्युत परिवहन पर थोक स्विच, दुनिया के प्रमुख शहरों में वायु प्रदूषण को कम करने के अतिरिक्त बोनस के साथ, उत्सर्जन को कम करने में भी एक बड़ी भूमिका निभाएगा। इलेक्ट्रिक वाहन तेजी से सस्ते और अधिक कुशल होते जा रहे हैं, और नेट जीरो के लिए प्रतिबद्ध देशों सहित कई देशों ने जीवाश्म-ईंधन से चलने वाली कारों की बिक्री को चरणबद्ध तरीके से बंद करने की योजना प्रस्तावित की है।

अन्य हानिकारक उत्सर्जन कृषि से आते हैं (पशुधन महत्वपूर्ण स्तर पर मीथेन, एक ग्रीनहाउस गैस का उत्पादन करते हैं)। यदि हम कम मांस और अधिक पौधे-आधारित खाद्य पदार्थ खाते हैं तो इन्हें काफी हद तक कम किया जा सकता है। यहां फिर से, संकेत आशाजनक हैं, जैसे कि "पौधे-आधारित मांस" की बढ़ती लोकप्रियता जो अब प्रमुख अंतरराष्ट्रीय फास्ट-फूड श्रृंखलाओं में बेची जा रही है।

शेष उत्सर्जन का क्या होगा?

उत्सर्जन को कम करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। शुद्ध शून्य तक पहुंचने के लिए, हमें वायुमंडल से कार्बन हटाने के तरीके भी खोजने होंगे। यहाँ फिर से, समाधान हाथ में हैं। सबसे महत्वपूर्ण हजारों वर्षों से प्रकृति में मौजूद हैं।

इन "प्रकृति-आधारित समाधानों" में वन, पीटबोग, मैंग्रोव, मिट्टी और यहां तक कि भूमिगत समुद्री शैवाल वन शामिल हैं, जो कार्बन को अवशोषित करने में अत्यधिक कुशल हैं। यही कारण है कि दुनिया भर में जंगलों को बचाने, पेड़ लगाने, पीट और मैंग्रोव क्षेत्रों के पुनर्वास के साथ-साथ खेती की तकनीकों में सुधार के लिए बड़े प्रयास किए जा रहे हैं।

नेट जीरो तक पहुंचने के लिए कौन जिम्मेदार है?

हम सभी व्यक्ति के रूप में अपनी आदतों को बदलने और ऐसे तरीके से जीने के लिए जिम्मेदार हैं जो अधिक टिकाऊ हो और जो ग्रह को कम नुकसान

पहुंचाए, जीवनशैली में उस तरह के बदलाव करें जो संयुक्त राष्ट्र के एक्ट नाउ अभियान में उजागर किए गए हैं।

निजी क्षेत्र को भी इस कार्य में शामिल होने की आवश्यकता है और वह यूएन ग्लोबल कॉम्पैक्ट के माध्यम से ऐसा कर रहा है, जो व्यवसायों को संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण और सामाजिक लक्ष्यों के साथ जुड़ने में मदद करता है।

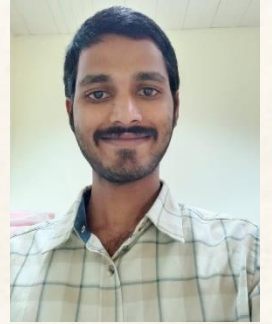
हालाँकि, यह स्पष्ट है कि परिवर्तन के लिए मुख्य प्रेरक शक्ति राष्ट्रीय सरकार के स्तर पर बनाई जाएगी, जैसे कि उत्सर्जन को कम करने के लिए कानून और विनियमों के माध्यम से। कई सरकारें अब सही दिशा में आगे बढ़ रही हैं। 2021 की शुरुआत तक, 65 प्रतिशत से अधिक वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन और 70 प्रतिशत से अधिक विश्व अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने वाले देश, कार्बन तटस्थता के

लिए महत्वाकांक्षी प्रतिबद्धताएं बना चुके होंगे। यूरोपीय संघ, जापान और कोरिया गणराज्य ने 110 से अधिक अन्य देशों के साथ मिलकर 2050 तक कार्बन तटस्थता का वादा किया है; चीन का कहना है कि वह 2060 से पहले ऐसा करेगा।

क्या नेट जीरो यथार्थवादी है?

हाँ! विशेष रूप से यदि प्रत्येक देश, शहर, वित्तीय संस्थान और कंपनी 2050 तक नेट जीरो उत्सर्जन में परिवर्तन के लिए यथार्थवादी योजनाएं अपनाते हैं।

कोविड-19 महामारी से उबरना एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक मोड़ हो सकता है। जब आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज लागू होंगे, तो नवीकरणीय ऊर्जा निवेश, स्मार्ट भवन, हरित और सार्वजनिक परिवहन और अन्य हस्तक्षेपों की एक पूरी श्रृंखला को बढ़ावा देने का एक वास्तविक अवसर होगा जो जलवायु परिवर्तन को धीमा करने में मदद करेगा।



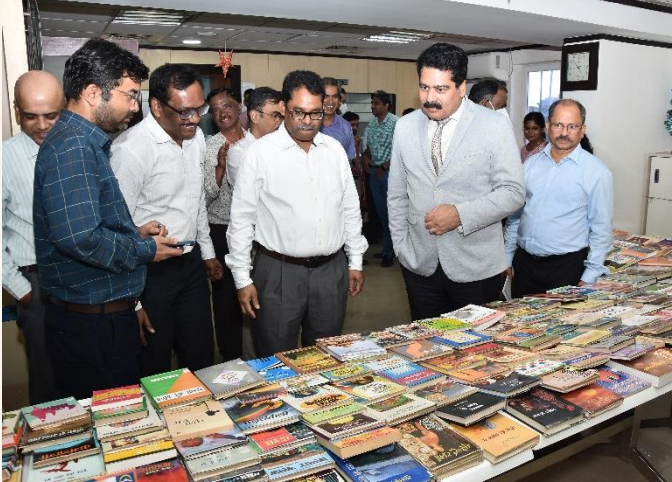
पी. राजा
परिचालन प्रबंधक
एसआरपीएल मदुरै

“हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।”

– मैथिलीशरण गुप्त



श्री शैलेश तिवारी, कार्यकारी निदेशक, दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स की अगुआई में जून 22, 2023 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला



विश्व हिन्दी दिवस-2023 के अवसर पर आयोजित हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान प्रदर्शनी में भाग लेते कार्यकारी निदेशक, दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स, चेन्नई, मुख्य महाप्रबंधक एवं सभी कर्मचारी गण। इस दौरान हिन्दी कलेंडर एवं तृभाषी शब्दकोश (तमिल-हिन्दी-अंग्रेजी) पुस्तक एवं सभी कर्मचारियों को पढ़ने के लिए एक-एक हिन्दी पुस्तक पुस्तकालय से वितरित की गई।



2022 के दौरान आयोजित हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ एवं बैठक

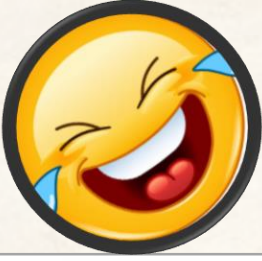


2022-23 के दौरान त्रिची स्टेशन का हिंदी निरीक्षण के उपरांत तस्वीर। इस दौरान सेटेशन आसानूर का भी हिन्दी निरीक्षण किया गया था।

हिन्दी निरीक्षण के क्रम में विभागीय वर्ग में वित्त विभाग एवं सामग्री विभाग का निरीक्षण किया गया था।

चुटकुलें

बैंक मैनेजर- कैश खत्म हो गया है कल आना
रामू- लेकिन मुझे मेरे पैसे अभी चाहिए
मैनेजर- देखिए आप गुस्सा मत करिए, शांति से बात कीजिए
रामू- ठीक है बुलाओ शांति को, आज तो मैं उसी से बात करूंगा।



पति- पत्नी की लड़ाई हो गई।
आधा दिन चुपचाप गुजरने के बाद पत्नी-पति के पास आई और
बोली- थोड़ा आप समझौता करो, थोड़ा मैं करती हूं।
पति - ठीक है क्या करना है?
पत्नी - आप माफी मांग लो, मैं माफ कर दूंगी।

एक लड़की ने पिज्जा शॉप में जा कर पिज्जा आर्डर किया।
वैटर- मैडम, इसके 4 पीस करूं या 8 पीस?
लड़की बोली- 4 पीस ही कर दो। 8 खाऊंगी तो मोटी हो जाऊंगी।



डॉक्टर - पागल से,
एक आदमी ने पूछा- भैया ये रास्ता किधर जाता है...?
पप्पू ने कहा- ये रास्ता बर्बादी की तरफ जाता है,
आदमी ने फिर पूछा- वह कैसे...?
पप्पू बोला- इसलिए कि इस रास्ते से मेरी बरात आई थी...



भिखारी- भगवान के नाम पे कुछ दे दे बाबा..
स्टूडेंट- ये ले.. मेरी B.A. की डिग्री रख ले..!
भिखारी- अब रुलाएगा क्या पगले..
तुझे चाहिए तो मेरी, M.B.A. की रख ले..!



टीचर- टीटू बताओ... अकबर ने कब तक शासन किया था?
टीटू- सर जी..
पेज नंबर 14 से लेकर पेज नंबर 22 तक।
फिर क्या टीचर ने टीटू को कूट कूटकर टोटी बना दिया।



SRPL
Beyond the Summit



इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

दक्षिणी क्षेत्र पाइपलाइन्स, चेन्नई-34